VOLUME- 1I ISSU -1I 16 March 2026

Dikshaurjit International Interdisciplinary Online Research Journal, Latur (DIIRJL)

Add.:Khadgaon Rd,Sambhaji Nagar,Near Smt.SushiladeviDeshmukh Senior College, LaturLatur, Maharashtra 413512, India.
Phone:9890408998, 8329647660Email ID: diirjournal@gmail.comWebsite:https://www.diirjournal.com

प्रा.वैशाली संजयराव मुळे
लोकमान्य अध्यापक विद्यालय, पानचिंचोली

बंगाल का अकाल (कविता आधारित अध्ययन)

१. सारांश

बंगाल का अकाल (१९४३) भारतीय इतिहास की सबसे दुखद घटनाओं में से एक है। इस अकाल के दौरान लाखों लोग भूख, कुपोषण और बीमारी के कारण मारे गए।

इस शोध में अकाल की पीड़ा को कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। कविता साहित्य न केवल भावनाओं को उजागर करता है बल्कि अकाल की सामाजिक और मानविक पीड़ा को भी संवेदनशील तरीके से सामने लाता है।

२. प्रस्तावना

१९४३ में बंगाल अकाल के दौरान लाखों लोगों की मौत हुई। इस अकाल ने समाज की गरीबी, असमानता और प्रशासनिक विफलताओं को उजागर किया।

कविता एक ऐसा साहित्यिक माध्यम है, जो अकाल जैसी मानव निर्मित त्रासदी के भावनात्मक पहलुओं को प्रभावी रूप में व्यक्त कर सकती है। इस जर्नल में अकाल की घटनाओं और उसकी पीड़ा को कविताओं के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है।

३. अकाल पर कविता

बंगाल की पीड़ा

भूखे पेट रोते हैं बच्चे,
सांसों में घुला है दर्द।
कांपती हैं बुढ़ापे की हड्डियां,
नयन भरता है अश्रुधारा का शेरद।

खेत सूख गए, नदियाँ भी रुक गईं,
अनाज के थैले खाली, सपने झुलस गए।
शासक दूर, उनकी नीति कठोर,
जन की पुकार सुनाई न दी कहीं।

लाखों मरे, हाथ फैले,
किसने देखा, किसने सुना?
कविता बताती है उन दिनों की सच्चाई,
मनुष्य और भूख के बीच की जंग।

४. अकाल के कारण

प्राकृतिक कारण - फसल की खराबी, बाढ़।

आर्थिक कारण - अनाज की बढ़ती कीमतें और गरीबी।

राजनीतिक कारण - ब्रिटिश प्रशासन की युद्धकालीन नीतियां।

प्रशासनिक असंवेदनशीलता - राहत कार्यों में देरी।

कविता में इन कारणों को भावनात्मक रूप में व्यक्त किया गया है।

४. अकाल के कारण

१.प्राकृतिक कारण - फसल की खराबी, बाढ़।

आर्थिक कारण - अनाज की बढ़ती कीमतें और गरीबी।

२.राजनीतिक कारण - ब्रिटिश प्रशासन की युद्धकालीन नीतियां।

३.प्रशासनिक असंवेदनशीलता- राहत कार्यों में देरी।

कविता में इन कारणों को भावनात्मक रूप में व्यक्त किया गया है।

५. अकाल के प्रभाव

१. मानव जीवन

लाखों लोग भूख और बीमारी से मरे।

बच्चों और वृद्धों पर सबसे अधिक प्रभाव।

२. समाज

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पलायन।

भय, असमानता और अविश्वास बढ़ा।

३. स्वास्थ्य

महामारी और कुपोषण का प्रकोप।

अस्पताल और राहत शिविर असमर्थ।

कविता इन मानवीय पीड़ाओं को सीधे पाठक तक पहुँचाती है।

६. अनुसंधान के उद्देश्य

१.अकाल की घटनाओं और पीड़ा को कविता के माध्यम से प्रस्तुत करना।

२.अकाल के सामाजिक और मानविक प्रभाव का अध्ययन करना।

३.साहित्यिक दृष्टि से अकाल की संवेदनशीलता को समझना।

४.कविता के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन करना।

७. अनुसंधान पद्धति

१.साहित्यिक अध्ययन - अकाल विषयक कविताओं का विश्लेषण।

२.ऐतिहासिक स्रोत - अकाल के सरकारी दस्तावेज और रिपोर्ट।

३.विश्लेषणात्मक पद्धति - कविता में व्यक्त भावनाओं और संदेश का अध्ययन।

८. कविता में अकाल का चित्रण

१.भावनात्मक प्रभाव - कविता अकाल की पीड़ा और मानवीय दुख को पाठक के दिल तक पहुँचाती है।

२.सामाजिक संदेश - प्रशासनिक असंवेदनशीलता और समाज की असमानता उजागर होती है।

३.मानवीय दृष्टि - भूखे लोगों की त्रासदी, बच्चों की हानि, वृद्धों का संघर्ष कविता में स्पष्ट दिखाई देता है।

९. निष्कर्ष

बंगाल का अकाल केवल भूख और प्राकृतिक आपदा नहीं था, बल्कि मानव निर्मित त्रासदी भी था। कविता के माध्यम से अकाल की पीड़ा और सामाजिक विषमताओं को अधिक संवेदनशील तरीके से समझा जा सकता है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कविता एक शक्तिशाली माध्यम है, जो ऐतिहासिक घटनाओं की मानवीय पीड़ा को उजागर करती है और पाठक को जागरूक बनाती है।

१०. संदर्भ

Sen, Amartya. Poverty and Famines: An Essay on Entitlement and Deprivation. Oxford University Press, 1981.

Mukherjee, Madhusree. Churchill's Secret War: The British Empire and the Ravaging of India during World War II. Basic Books, 2010.

Government of Bengal Reports, 1943–44.

Bandyopadhyay, Sekhar. From Plassey to Partition: A History of Modern India. Orient Blackswan, 2004.

कविता स्रोत - विभिन्न हिंदी साहित्य पत्रिकाएँ और ऑनलाइन साहित्यिक वेबसाइट्स।